समास

समास का शाब्दिक अर्थ होता है – छोटा (संक्षिप्त रूप)

समास

परस्पर संबंध रखने वाले दो अथवा अधिक पदों के मेल से उत्पन्न विकार को समास कहते हैं। दो शब्दों के मेल से बना पद समस्त पद कहलाता है। समस्त पद का पहला पद पूर्व पद कहलाता है। समस्त पद का दूसरा पद उत्तर पद कहलाता है। समस्त पद का विग्रह समास विग्रह कहलाता है।

जैसे:– सर्वप्रिय – सबको प्रिय

कष्टसाध्य	–	कष्ट से साध्य
यथा संभव	–	जितना संभव हो सके
यथाविधि	–	विधि के अनुसार
भरसक	–	पूरी शक्ति से
नीलकंठ	–	नीला है कंठ जिसका
नीलगाय	–	नीली है जो गाय

समास के चार भेद होते हैं:–

1. तत्पुरुष समास
2. द्वंद्व समास
3. अव्ययीभाव समास
4. बहुव्रीहि समास

तत्पुरुष के दो उपभेद भी होते हैं

1. कर्मधारय तत्पुरुष समास
2. द्विगु तत्पुरुष समास

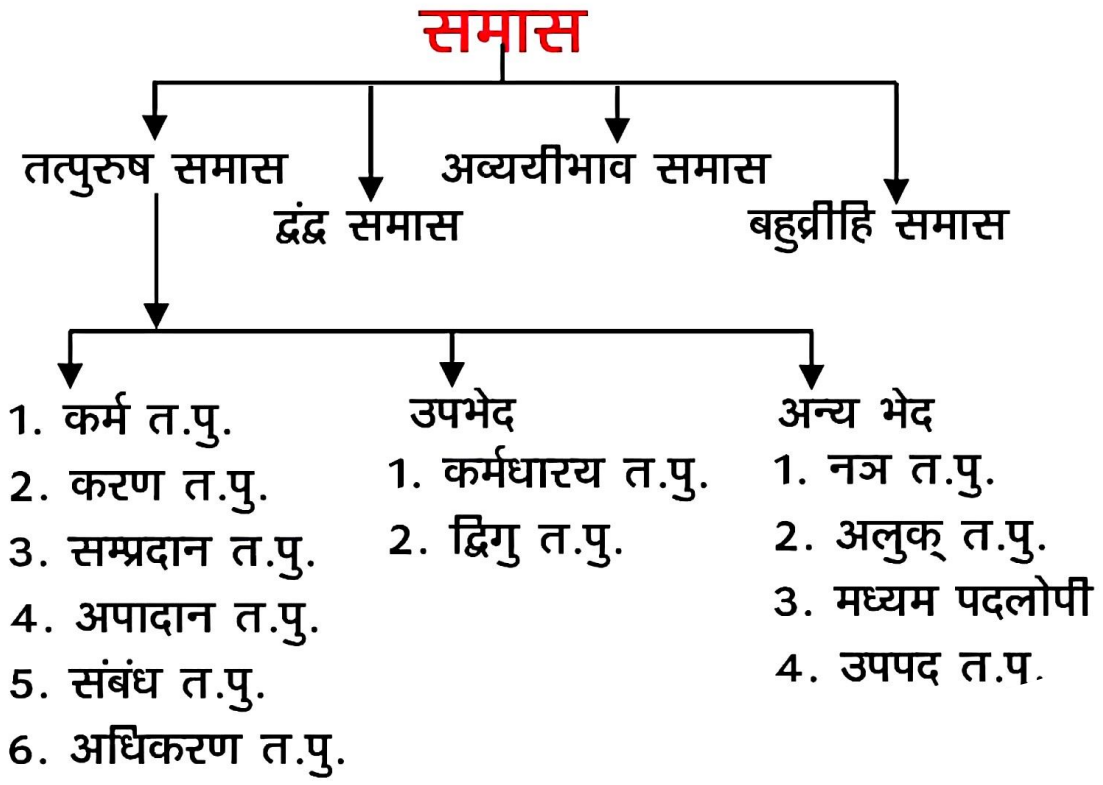

तत्पुरुष समास

वह समास जिसका दूसरा (उत्तर) पद प्रधान हो तथा पहला पद गौण हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

पहचानः– इसमें विग्रह करते समय कारक चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इसके जोड़ने पर विभक्ति चिह्न या कारक चिह्न का लोप हो जाता है।

जैसेः–

यश प्राप्त – यश को प्राप्त

पद प्राप्त – पद को प्राप्त

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास के छः भेद होते हैंः–

1. कर्म तत्पुरुष समास
2. करण तत्पुरुष समास
3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास
4. अपादान तत्पुरुष समास
5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास
6. अधिकरण तत्पुरुष समास

1. कर्म तत्पुरुष समास :

जहाँ पूर्वपद में कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है, वहाँ कर्म तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

ग्रंथकार	–	ग्रंथ को रचनेवाला
सर्वप्रिय	–	सबको प्रिय
शरणागत	–	शरण को आगत

2. करण तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है, उसे करण तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसेः–

तुलसीकृत	–	तुलसी द्वारा कृत
मनगढ़त	–	मन से गढ़ी हुई
गुणयुक्त	–	गुण से युक्त
प्रेमातुर	–	प्रेम से आतुर

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में सम्प्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है, वहाँ सम्प्रदान तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

राहखर्च	–	राह के लिए खर्च
पुण्यदान	–	पुण्य के लिए दान
गौशाला	–	गौ के लिए शाला

4. अपादान तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में अपादान कारक की विभक्ति 'से' का लोप हो जाता है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

देश निकाला	–	देश से निकाला
धर्म विमुख	–	धर्म से विमुख
धर्म भ्रष्ट	–	धर्म से भ्रष्ट

5. सम्बन्ध तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में सम्बन्ध कारक की विभक्ति 'का', के, की' का लोप हो जाता है, वहाँ सम्बन्ध तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

देशवासी	–	देश का वासी
राजपुत्री	–	राजा की पुत्री
देवालय	–	देव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष समासः

जहाँ पूर्वपद में अधिकरण कारक 'में', 'पर' विभक्ति का लोप हो जाता है, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष समास होता है।

जैसेः–

दानवीर	–	दान में वीर
घुड़सवार	–	घोड़े पर सवार
स्वर्गवास	–	स्वर्ग में वास

तत्पुरुष समास के दो उपभेद होते हैं।

1. कर्मधारय तत्पुरुष समास
2. द्विगु तत्पुरुष समास

कर्मधारय तत्पुरुष समास

कर्मधारय समास में एक पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा एक पद उपमेय तथा दूसरा पद उपमान होता है अर्थात् दोनों में से एक की तुलना या उपमा दूसरे से की जाती है।

क. विशेषण	–	विशेष्य
महादेव	–	महान है जो देव
अंधकूप	–	अंधा है जो कूप
पुरूषोत्तम	–	पुरुषों में है जो उत्तम
ख. उपमेय	–	उपमान
कमलनयन	–	कमल के समान नयन
भुजदंड	–	दंड के समान भुजा
कर–पल्लव	–	पल्लव रूपी कर
कर–कमल	–	कमल रूपी कर
घनश्याम	–	धन के समान श्याम

द्विगु समास

वह समास जिसका पूर्व (पहला) पद संख्यावाची विशेषण हो उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें भी पूर्व (पहला) तथा उत्तर (दूसरा) पद में विशेषण–विशेष्य का संबंध होता है।

अर्थ की दृष्टि से यह समास समूहवाची होता है।

जैसेः–

त्रिवेणी	–	तीन वेणियों का समाहार/समूह
चौमासा	–	चार मासों का समाहार/समूह
नवरात्र	–	नौ रातों का समाहार/समूह

तत्पुरुष समास के अन्य भेद

क. <u>नञ तत्पुरुष समास</u>:– इस समास का पूर्व पद 'न' का भाव उत्पन्न करता है।

जैसे:–

अछूत – न छूत

अनहोनी – न होनी

ख. <u>अलुक् तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास के दोनों पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता।

जैसे:–

युधिष्ठिर– युद्ध में स्थिर

मनसिज – मन में उत्पन्न

ग. <u>मध्यम पद लोपी तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास में दो पदों के बीच दो से अधिक पदों का लोप होता है।

जैसे:–

दही बड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा

रेलगाड़ी – रेल पर चलने वाली गाड़ी

घ. <u>उपपद तत्पुरुष समास</u>:– इस तत्पुरुष समास के दूसरे पद का पृथक रूप में प्रचलन सामान्यतः नहीं होता।

जैसे:–

शास्त्रज्ञ – शास्त्र + ज्ञ (शास्त्रों का ज्ञाता)

नीरद – नीर + द (नीर का दाता)

द्वंद्व समास

वह समास जिसमें दोनों पद प्रधान हो, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों के बीच और, तथा, अथवा, या का प्रयोग होता है।

जैसे:–

हानि–लाभ	–	हानि और लाभ
राजा–रंक	–	राजा और रंक
माता–पिता	–	माता और पिता
भीमार्जुन	–	भीम और अर्जुन
न्यूनाधिक	–	न्यून अथवा अधिक
लव–कुश	–	लव और कुश
देवासुर	–	देव और असुर

अव्ययीभाव समास

वह समास जिसका पूर्व पद प्रधान व अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसेः–

यथाशीघ्र	–	जितना शीघ्र हो सके।
आजीवन	–	जीवन भर
यथामति	–	मति के अनुसार
यथारूचि	–	रूचि के अनुसार
प्रतिदिन	–	हर दिन
प्रतिपल	–	हर पल

बहुव्रीहि समास

जिसमें दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विशेषण होते हैं। तीसरा पद प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसेः–

पीताम्बर	–	पीला है वस्त्र जिसका (श्रीकृष्ण)
दीर्घबाहु	–	लंबी भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)
अष्टभुजा	–	आठ भुजाएँ हैं जिसकी (दुर्गा)

कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर

उ0 <u>कर्मधारय समास</u>ः–

1. यह समास तत्पुरुष समास का उपभेद है।
2. इस समास में दूसरा पद प्रधान व पहला पद गौण होता है।
3. इस समास में दोनों पदों के बीच में विशेषण व विशेष्य संबंध होता है।

जैसेः–नीलकंठ – नीला है जो कंठ

<u>बहुव्रीहि समास</u> :–

1. यह समास एक स्वतंत्र समास है।
2. इसमें दोनों पद गौण होते हैं तथा तीसरा पद प्रधान होता है।
3. दोनों पद मिलकर तीसरे पद के विशेषण होते हैं। तीसरा पद प्रधान है।
   जैसेः– नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका (शिव)

द्विगु और द्वंद्व समास में अंतर

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है।

द्विगु समास तत्पुरुष समास का उपभेद है।

जैसे:– द्विगु–दो गौओं का समाहार

द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं।

इसमें दोनों के बीच और, तथा, अथवा, या का प्रयोग होता है।

जैसे:– खट्टा–मीठा : खट्टा और मीठा

माता–पिता : माता और पिता

अव्ययीभाव समास व बहुव्रीहि समास में अंतर

अव्ययीभाव समास में पूर्व पद प्रधान होता है।

जैसे:– भरसक : पूरी शक्ति से

बहुव्रीहि समास में तीसरा व अन्य पद प्रधान होता है।

जैसे:– पीतांबर : पीला है वस्त्र जिसका (कृष्ण)